Volume: 5 Issue: 7 Pages: 92-94

रामकथा-आधारित नारी-प्रधान आधुनिक हिंदी उपन्यासों में लैंगिक परिवेश: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

[*1] Dr. Vijeta Laxmi

[*1] Research Scholar, University of Delhi, Delhi, India.

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 19/June/2026
Accepted: 23/July/2026

***Corresponding Author**
Dr. Vijeta Laxmi
Research Scholar, University of Delhi, Delhi, India.

सारांश:
रामकथा भारतीय संस्कृति की सबसे प्रभावशाली एवं दीर्घजीवी कथा-परंपरा है, जिसका पुनर्सृजन प्रत्येक युग में नए वैचारिक संदर्भों के साथ होता रहा है। परंपरागत रामकथा-वाल्मीकि रामायण एवं तुलसीकृत रामचरितमानस-मूलतः पुरुष-केंद्रित दृष्टिकोण से रची गई है, जिसमें स्त्री-पात्रों की भूमिका सहनशीलता, त्याग और मूक समर्पण तक सीमित रही है। किंतु बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से हिंदी उपन्यासकारों ने इसी रामकथा को आधार बनाकर सीता, कैकेयी, मंदोदरी, उर्मिला और अहल्या जैसी नायिकाओं को केंद्र में रखकर ऐसे उपन्यासों की रचना की, जिनमें लैंगिक असमानता, देह-राजनीति, वैवाहिक संबंधों की सत्ता-संरचना तथा पुरुषत्व की परंपरागत परिभाषा पर गंभीर प्रश्न उठाए गए हैं। प्रस्तुत शोध पत्र मृदुला सिन्हा, स्नेह ठाकुर, प्रमोद तिवारी, आशा प्रभात, किरण सिंह, नरेंद्र कोहली और अरुणा मुकिम द्वारा रचित रामकथा-आधारित नारी-प्रधान उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें यह देखने का प्रयास किया गया है कि इन उपन्यासों में लैंगिक परिवेश किन-किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है-स्त्री-देह पर सामाजिक नियंत्रण से लेकर शिक्षा एवं सार्वजनिक क्षेत्र में स्त्री की भागीदारी तक, तथा पुरुष-पात्रों की मानवीय पुनर्व्याख्या तक। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि ये उपन्यास परंपरा की पुनर्व्याख्या करते हुए समकालीन लैंगिक न्याय की चेतना को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं, तथा स्त्री-पुरुष दोनों के मानवीय पक्षों को संतुलित एवं समावेशी दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं।

मुख्य शब्द: रामकथा, नारी-प्रधान उपन्यास, लैंगिक परिवेश, लैंगिक न्याय, स्त्री-विमर्श, पितृसत्ता, देह-राजनीति, पुरुषत्व, सीता, कैकेयी, मंदोदरी, उर्मिला, अहल्या, समकालीन हिंदी उपन्यास।

प्रस्तावना:

रामकथा भारतीय समाज की सबसे प्रभावशाली सांस्कृतिक निधि रही है, और इसी कारण इसमें अंतर्निहित स्त्री-पुरुष संबंधों की संरचना, लैंगिक भूमिकाओं का विभाजन तथा सत्ता के लैंगिक समीकरण भी सदियों से भारतीय सामाजिक चेतना को प्रभावित करते रहे हैं। परंपरागत रामकथा—चाहे वह वाल्मीकि रामायण हो या तुलसीकृत रामचरितमानस—मूलतः पुरुष-केंद्रित दृष्टिकोण से रची गई है, जिसमें स्त्री पात्रों को प्रायः सहनशीलता, त्याग और मूक समर्पण के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। किंतु बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से हिंदी उपन्यासकारों ने इसी रामकथा को आधार बनाकर ऐसी रचनाएँ कीं, जिनमें लैंगिक भूमिकाओं, लैंगिक न्याय और स्त्री-पुरुष संबंधों की सत्ता-संरचना पर गहन प्रश्न उठाए गए।

मृदुला सिन्हा, स्नेह ठाकुर, प्रमोद तिवारी, आशा प्रभात, किरण सिंह, नरेंद्र कोहली और अरुणा मुकिम जैसे उपन्यासकारों ने सीता, कैकेयी, मंदोदरी, उर्मिला और अहल्या जैसी नायिकाओं के माध्यम से लैंगिक परिवेश की उन जटिलताओं को उभारा है, जो परंपरागत कथा-पाठ में या तो अनकही रह गई थीं अथवा एकपक्षीय दृष्टि से प्रस्तुत की गई थीं। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं उपन्यासों के आलोक में रामकथा-आधारित नारी-प्रधान उपन्यासों में लैंगिक परिवेश की अभिव्यक्ति का विश्लेषण करने का प्रयास है।

'लैंगिक परिवेश' पद से यहाँ तात्पर्य उस समूचे सामाजिक-सांस्कृतिक ढाँचे से है, जिसमें स्त्री और पुरुष की भूमिकाएँ, उनके अधिकार-क्षेत्र, उनकी देह पर लगाए गए नियंत्रण, तथा उनके सार्वजनिक एवं निजी जीवन में शक्ति का बँटवारा निर्धारित होता है। रामकथा जैसी दीर्घजीवी कथा-परंपरा में यह परिवेश समय के साथ बदलता रहा है, और आधुनिक उपन्यासकारों ने इसी परिवर्तनशीलता का उपयोग करते हुए वर्तमान लैंगिक चेतना को कथा में पिरोया है।

अध्ययन का उद्देश्य एवं पद्धति

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह जाँचना है कि रामकथा-आधारित नारी-प्रधान उपन्यासों में लैंगिक असमानता, लैंगिक न्याय, देह-राजनीति, वैवाहिक संबंधों की सत्ता-संरचना तथा पुरुषत्व की परिभाषा जैसे प्रश्न किस प्रकार उठाए गए हैं। अध्ययन की पद्धति विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक है, जिसमें परंपरागत रामकथा-ग्रंथों में निहित लैंगिक दृष्टिकोण की तुलना आधुनिक नारी-प्रधान उपन्यासों में प्रस्तुत लैंगिक चेतना से की गई है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि किस प्रकार का वैचारिक रूपांतरण घटित हुआ है।

परंपरागत रामकथा में लैंगिक संरचना

परंपरागत रामकथा में लैंगिक भूमिकाओं का विभाजन स्पष्ट रूप से पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर आधारित रहा है। राजा दशरथ की बहुपत्नी-प्रथा, सीता की अग्नि-परीक्षा, तथा गर्भवती सीता का वन में परित्याग—ये सभी प्रसंग उस लैंगिक असंतुलन को उजागर करते हैं, जिसमें स्त्री की शुचिता, चरित्र और निष्ठा पर तो निरंतर प्रश्न उठाए जाते हैं, किंतु पुरुष के आचरण की समान कसौटी पर परीक्षा नहीं ली जाती। इसी प्रकार कैकेयी को केवल सत्तालोलुप और पुत्रमोही स्त्री के रूप में चित्रित करना भी एक लैंगिक पूर्वाग्रह का परिणाम माना जा सकता है, जबकि राजा दशरथ के वचन-बद्ध होने की जिम्मेदारी पर उतना प्रश्न नहीं उठाया गया।

आधुनिक नारी-प्रधान उपन्यासकारों ने इसी असंतुलन को अपनी रचनाओं का केंद्रीय प्रस्थान-बिंदु बनाया है। इन उपन्यासों में स्त्री-पात्रों को केवल भोग्या, त्यागमयी अथवा कलंकित के रूप में नहीं, बल्कि तर्कशील, प्रश्नाकुल और अपने अस्तित्व के प्रति सजग व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे रामकथा के भीतर छिपी लैंगिक विषमता को उजागर करने का प्रयास हुआ है।

देह, शुचिता और लैंगिक राजनीति: सीता का प्रसंग

सीता का चरित्र लैंगिक परिवेश के अध्ययन की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उनके साथ जुड़ी अग्नि-परीक्षा और वनवास की घटनाएँ स्त्री-देह पर आरोपित सामाजिक नियंत्रण का सबसे स्पष्ट उदाहरण हैं। आशा प्रभात के उपन्यास 'मैं जनक नंदिनी' में सीता स्पष्ट रूप से यह प्रश्न उठाती हैं कि उनकी शुचिता की परीक्षा क्यों ली जाए, जबकि एक माँ होने का प्रमाण किसी परीक्षा का मोहताज नहीं होता। वे राम को राजधर्म और पतिधर्म के बीच के अंतर को समझाते हुए स्पष्ट कहती हैं कि वैवाहिक संबंध राजसत्ता के अधीन नहीं, अपितु विश्वास और मन का विषय है। इसी प्रकार मृदुला सिन्हा के उपन्यास 'सीता पुनि बोली' में भी सीता अग्नि-परीक्षा देने से इनकार करती हैं और यह प्रश्न करती हैं कि यह परीक्षा केवल इसलिए क्यों ली जाए क्योंकि वे स्त्री हैं।

इन प्रसंगों के माध्यम से उपन्यासकारों ने यह स्पष्ट किया है कि लैंगिक परिवेश में स्त्री-देह को सामाजिक निगरानी और नियंत्रण की वस्तु बना दिया जाता है, जबकि पुरुष का आचरण इस निगरानी से मुक्त रहता है। सीता का प्रतिरोध इसी असमान लैंगिक व्यवस्था के विरुद्ध एक सशक्त स्वर है।

देह-कलंक और पुनर्वास की राजनीति: अहल्या का पुनर्पाठ

अहल्या का प्रसंग लैंगिक परिवेश के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत सूचक है, क्योंकि परंपरागत कथा में यह प्रश्न कभी नहीं उठाया गया कि इंद्र द्वारा छल से हुए संसर्ग में अहल्या की क्या भूमिका थी, फिर भी दंड केवल अहल्या को ही भोगना पड़ा। किरण सिंह के उपन्यास 'शिलावहा' में अहल्या स्वयं इस लैंगिक अन्याय को मुखर होकर उजागर करती हैं—वे यह प्रश्न उठाती हैं कि स्त्री की यौन इच्छा पर कठोर नियंत्रण का नियम केवल रक्त-शुद्धता और संपत्ति के हस्तांतरण को सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया है। नरेंद्र कोहली के उपन्यास 'अहल्या' में भी यह प्रश्न उठाया गया है कि यदि अहल्या दोषी थी तो राम उनके चरण क्यों स्पर्श करते, और यदि निर्दोष थी तो उसे दंड क्यों भोगना पड़ा।

इसके अतिरिक्त, यह उल्लेखनीय है कि परंपरागत कथा में अहल्या का उद्धार सदैव किसी पुरुष (राम) के माध्यम से ही होता है, जो स्वयं में एक लैंगिक असंतुलन को दर्शाता है—स्त्री अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा पुनः स्वयं अर्जित नहीं कर सकती, उसे किसी पुरुष के अनुमोदन की आवश्यकता होती है। किरण सिंह की अहल्या इस व्यवस्था को चुनौती देते हुए अपनी मुक्ति का श्रेय किसी और को देने से इनकार करती है और स्वावलंबी जीवन जीने का मार्ग चुनती है, जो लैंगिक स्वायत्तता की आधुनिक चेतना का परिचायक है।

वैवाहिक संबंधों में लैंगिक गतिकी

रामकथा-आधारित नारी-प्रधान उपन्यासों में वैवाहिक संबंधों के भीतर की लैंगिक असमानता को भी गहराई से उभारा गया है। अरुणा मुकिम के उपन्यास 'महलों में वनवास' में उर्मिला अपने पति लक्ष्मण के चौदह वर्ष के वियोग को झेलती हैं, जबकि इस दीर्घ त्याग की कोई विशेष सामाजिक स्वीकृति अथवा स्मृति उन्हें प्राप्त नहीं होती। उर्मिला स्वयं यह प्रश्न उठाती हैं कि क्या नारी केवल पुरुष के मनोरंजन और सेवा का साधन मात्र है, तथा क्यों समाज एक स्त्री के सिर पर ही सदैव त्याग और आदर्श का बोझ लाद देता है। यह प्रसंग वैवाहिक संबंधों में स्त्री की अदृश्य भावनात्मक श्रम-शक्ति और उसकी सामाजिक अस्वीकृति को उजागर करता है।

इसी प्रकार कैकेयी के चरित्र में भी वैवाहिक सत्ता-संरचना की लैंगिक विषमता स्पष्ट होती है। स्नेह ठाकुर के उपन्यास 'कैकेयी चेतना शिखा' और प्रमोद तिवारी के उपन्यास 'अजेय योद्धा कैकेयी' में यह प्रश्न उठाया गया है कि राजा दशरथ द्वारा दिया गया वचन और उसकी पूर्ति का संपूर्ण दोष केवल कैकेयी पर क्यों मढ़ा गया, जबकि निर्णय की प्रक्रिया में राजा की भी उतनी ही भागीदारी थी। इन उपन्यासों में कैकेयी को शस्त्र-विद्या, राजनीति और युद्ध-कौशल में निपुण वीरांगना के रूप में प्रस्तुत कर उपन्यासकारों ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि स्त्री की योग्यता और उसके सार्वजनिक अवमूल्यन के बीच का अंतराल लैंगिक पूर्वाग्रह का ही परिणाम है।

पुरुषत्व के नए प्रतिमान

लैंगिक परिवेश के अध्ययन में केवल स्त्री-पात्रों तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं है; यह देखना भी आवश्यक है कि इन उपन्यासों में पुरुषत्व की परिभाषा किस प्रकार बदली गई है। राम को यहाँ अलौकिक अथवा सर्वदोषमुक्त आदर्श पुरुष के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है, जो राजधर्म के दायित्व और पतिधर्म की अपेक्षाओं के बीच संघर्ष करता है, और अंततः पतिधर्म के निर्वाह में असफल भी होता है। सीता स्वयं राम को यह कहकर पत्याग करती हैं कि वे एक अच्छे राजा तो बने, किंतु एक अच्छे पति सिद्ध नहीं हो सके। यह चित्रण परंपरागत 'मर्यादा पुरुषोत्तम' की छवि को मानवीय एवं लैंगिक दृष्टि से अधिक संतुलित बनाने का प्रयास है।

इसके साथ ही, रावण के चरित्र में भी मंदोदरी को नीति-निर्णयों में सहभागी बनाने की प्रवृत्ति दिखाई गई है, जो परंपरागत निरंकुश पितृसत्तात्मक शासक की छवि से भिन्न है। मृदुला सिन्हा के उपन्यास 'पीड़ित लंकेश्वरी' में रावण मंदोदरी से कहता है कि वह राजकाज में हस्तक्षेप कर सकती है और यदि वह मार्ग से भटके तो उसे सही राह दिखा सकती है—यह कथन एक अपेक्षाकृत समतामूलक वैवाहिक संबंध की कल्पना प्रस्तुत करता है, भले ही रावण का समग्र चरित्र अहंकार और स्त्री-लोलुपता से मुक्त न हो।

शिक्षा, शस्त्र-विद्या और सार्वजनिक क्षेत्र में स्त्री की भागीदारी

लैंगिक परिवेश के अध्ययन में शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में स्त्री की भागीदारी का प्रश्न केंद्रीय महत्त्व रखता है। इन उपन्यासों में

सीता, कैकेयी और उर्मिला जैसी नायिकाएँ शस्त्र-विद्या, राजनीति, अर्थशास्त्र और युद्ध-कौशल में प्रशिक्षित दिखाई जाती हैं, जो परंपरागत रूप से पुरुष के अधिकार-क्षेत्र माने जाते रहे हैं। प्रमोद तिवारी के उपन्यास 'अजेय योद्धा कैकेयी' में बालिका-शिक्षा को आश्रमों में संस्थागत रूप देने, तथा कन्या-जन्म को पुत्र-जन्म के समान महत्त्व देने जैसे प्रसंग यह दर्शाते हैं कि उपन्यासकार लैंगिक समानता को केवल वैयक्तिक स्तर पर नहीं, अपितु नीतिगत एवं संस्थागत स्तर पर भी स्थापित करना चाहते हैं।

मृदुला सिन्हा के उपन्यास 'अहल्या उवाच' में भी राम-सीता के विवाह के अवसर पर संपूर्ण ऋषि-समाज बालिकाओं की शिक्षा को बालकों के समान महत्त्व देने का संकल्प लेता है। यह प्रसंग दर्शाता है कि उपन्यासकार लैंगिक समानता को रामकथा के धार्मिक-सामाजिक ढाँचे के भीतर से ही न्यायोचित ठहराने का प्रयास करते हैं, जिससे यह परिवर्तन परंपरा के प्रति विद्रोह की बजाय उसके पुनर्नवीकरण के रूप में सामने आता है।

गौण स्त्री-पात्रों के माध्यम से लैंगिक विमर्श का विस्तार

रामकथा-आधारित नारी-प्रधान उपन्यासों में मंथरा, वेदवती, ताड़का, शूर्पणखा जैसी गौण एवं नकारात्मक मानी जाने वाली स्त्री-पात्रों के प्रति भी एक नई लैंगिक संवेदना दिखाई देती है। इन पात्रों को केवल कुटिल अथवा कामातुर स्त्री के रूप में नहीं, बल्कि उन सामाजिक परिस्थितियों की उपज के रूप में समझने का प्रयास किया गया है, जिनमें स्त्री को सीमित विकल्पों के बीच जीवन जीना पड़ता है। यह दृष्टिकोण लैंगिक विमर्श को केवल 'अच्छी' और 'बुरी' स्त्री के द्वैत से आगे ले जाकर अधिक जटिल एवं मानवीय बनाता है।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि रामकथा-आधारित नारी-प्रधान आधुनिक हिंदी उपन्यासों में लैंगिक परिवेश एक केंद्रीय एवं बहुआयामी विषय के रूप में उभरा है। इन उपन्यासों में स्त्री-देह पर सामाजिक नियंत्रण, वैवाहिक संबंधों की असमान सत्ता-संरचना, शिक्षा एवं सार्वजनिक क्षेत्र में स्त्री की भागीदारी का प्रश्न, तथा पुरुषत्व की परंपरागत परिभाषा का पुनर्मूल्यांकन—इन सभी स्तरों पर लैंगिक न्याय की तलाश स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

यह भी उल्लेखनीय है कि इन उपन्यासों में लैंगिक विमर्श पुरुष-विरोध अथवा एकपक्षीय आक्रोश तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह स्त्री और पुरुष दोनों के मानवीय पक्षों को समान संवेदना के साथ देखने का प्रयास करता है। राम और रावण जैसे पुरुष-पात्रों में भी संवाद, सहभागिता और आत्मालोचन की संभावना तलाशी गई है, जिससे लैंगिक परिवेश का यह चित्रण द्वंद्वात्मक होने के बजाय संतुलित एवं समावेशी बन जाता है। अतः कहा जा सकता है कि रामकथा-आधारित नारी-प्रधान उपन्यास भारतीय समाज में लैंगिक न्याय की सतत खोज का एक सशक्त साहित्यिक माध्यम बन गए हैं, जो परंपरा की पुनर्व्याख्या करते हुए समकालीन लैंगिक चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।

संदर्भ सूची:

1. सिन्हा, मृदुला. पीड़ित लंकेश्वरी. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015.
2. सिन्हा, मृदुला. सीता पुनि बोली. विद्या विहार प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016.
3. सिन्हा, मृदुला. अहल्या उवाच. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018.
4. ठाकुर, स्नेह. कैकेयी चेतना शिखा. स्टार पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2013.
5. ठाकुर, स्नेह. श्रीरामप्रिया सीता. स्टार पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2014.
6. तिवारी, प्रमोद. अजेय योद्धा कैकेयी. रंग प्रकाशन, इंदौर, 2019.
7. प्रभात, आशा. मैं जनक नंदिनी. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017.
8. सिंह, किरण. शिलावहा. आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2019.
9. कोहली, नरेंद्र. अहल्या. पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया, गुड़गाँव, 2019.
10. मुकिम, अरुणा. महलों में वनवास. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019.
11. वाल्मीकि. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण. गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् 2073.
12. तुलसीदास. श्रीरामचरितमानस. गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् 2069.